International Journal of Academic Research
P-ISSN: 2348-7666: Impact Factor: 7.215
Homepage: https://www.ijar.org.in/
Volume-13, Issue-2(2), Apr-Jun-2026
This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License [CC BY 4.0]

युद्ध का वैश्विक घाव: आर्थिक, पारिस्थितिक और पर्यावरण चुनौतियों का समकालीन विश्लेषण

Sri. Hebbare Manikantha Rao
Guest faculty in Hindi, K.V.R. Govt. College for Women(A), Cluster University, Kurnool Andhra Pradesh

प्रस्तावना

युद्ध की बदलती प्रकृति और वैश्विक प्रभाव : 21 वी सदी में युद्ध की परिभाषा बदल चुकी है। आज युद्ध केवल दो सेनाओं के बीच का मुकाबला नहीं, बल्कि यह एक जाल है जिसमें अर्थशास्त्र, पारिस्थितिक, और पर्यावरण आपस में जुड़े हुए हैं। जब एक मिसाइल किसी शहर पर गिरती है, तो वह केवल कंक्रीट की इमारतों को नहीं गिराती, बल्कि वैश्विक शेयर बाजार, खाद्य आपूर्ति श्रृंखला और जलवायु पारिस्थितिकी पर भी गहरा प्रभाव डालती हैं।

अहिंसा केवल एक नैतिक विचार नहीं, बल्कि आधुनिक युग की एक अनिवार्य आवश्यकता बन गई है। युद्ध का "डोमिनो इफेक्ट" यह सुनिश्चित करता है कि युद्ध के मैदान से हजारों मील दूर बैठा व्यक्ति भी इसके प्रभाव को महसूस करे। युद्ध से जो नुकसान होता है, उसका असर केवल उस समय तक नहीं रहता, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों तक अर्थव्यवस्था और प्रकृति दोनों पर दिखाई देता है।

1. आर्थिक अस्थिरता

वित्तीय प्रणालियों का पतन युद्ध के सबसे गंभीर आर्थिक प्रभावों में से एक है। युद्ध का प्रहार केवल सैन्य क्षेत्र तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह व्यापक रूप से आर्थिक ढांचे को भी प्रभावित करता है। जब आर्थिक युद्ध की बात की जाती है, तो इसमें बैंकों पर हमले, वित्तीय संस्थानों की अस्थिरता तथा साइबर और डाटा हमले प्रमुख भूमिका निभाते हैं। इन परिस्थितियों में निवेश, व्यापार और अंतरराष्ट्रीय लेन–देन और आगमन - निगमन बाधित हो जाते हैं, जिससे आर्थिक गतिविधियाँ धीमी हो जाती हैं। इसका प्रभाव पर्यटन - होटल उद्योग पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। आर्थिक अस्थिरता, सुरक्षा संबंधी चिंताओं के कारण पर्यटकों की संख्या तेजी से घटने लगती है, जिससे होटल सेवाएँ, यात्रा व्यवसाय और स्थानीय पर्यटन पर आधारित अर्थव्यवस्थाएँ प्रभावित होती हैं। परिणामस्वरूप रोजगार के अवसर कम होते हैं, कई क्षेत्रों में पर्यटन से मिलने वाली आय में भारी गिरावट आती है। इस प्रकार युद्ध से उत्पन्न वित्तीय अस्थिरता न केवल वैश्विक अर्थव्यवस्था को कमजोर करती है, बल्कि पर्यटन और आतिथ्य उद्योग इत्यादि महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर भी दीर्घकालिक नकारात्मक प्रभाव डालती है।

(अ) बैंकिंग प्रणाली का पतन और जन-अविश्वास

किसी भी राष्ट्र की स्थिरता बैंकिंग तंत्र पर टिकी होती है। युद्ध के दौरान जब केंद्रीय बैंकों या निजी वित्तीय संस्थानों को निशाना बनाया जाता है, तो नागरिकों का अपनी जमा से विश्वास उठ जाता है। बैंकों के बाहर लगती लंबी कतारें, डिजिटल ट्रांजैक्शन का समापन समाज में अराजकता पैदा करता है। यह केवल एक देश की समस्या नहीं है, वैश्विक अंतर्संबंधों के कारण अंतरराष्ट्रीय भुगतान प्रणालियाँ भी प्रभावित होती हैं, जिससे व्यापार रुक जाता है।

(ब) मुद्रास्फीति और क्रय शक्ति का ह्रास

युद्ध 'हाइपर-इन्फ्लेशन' का जनक है। रक्षा बजट में अचानक वृद्धि के कारण सरकारें अक्सर अधिक मुद्रा छापती हैं, या अन्य देशों से भारी कर्ज लेती हैं। इससे मुद्रा का मूल्य गिर जाता है। एक सामान्य परिवार के लिए रोटी, कपड़ा और मकान जैसी बुनियादी जरूरतें भी महँगे होजाते हैं जब राजधानी या प्रमुख औद्योगिक शहरों पर हमले होते हैं, तो उत्पादन बंद हो जाता है, संतुलन बिगड़ जाता है।

2. ऊर्जा राजनीति और तेल का बुनियादी ढांचा

मध्य पूर्व के राष्ट्र - आधुनिक युद्धों में ऊर्जा को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

(अ) तेल डिपो और रिफाइनरियों पर प्रहार

युद्ध के दौरान तेल भंडारों, पानी जहाजों को जलाना दुश्मन की गतिशीलता को रोकने का एक तरीका माना जाता है, लेकिन इसके परिणाम भयानक होते हैं। तेल-गैस की वैश्विक कीमतों में शीघ्र उछाल आने से हर वस्तु महंगी हो जाती है - खेत में चलने वाले ट्रैक्टर से लेकर, ट्रकों तक। यह सीधे तौर पर वैश्विक गरीबी दर को बढ़ाता है।

(ब) आपूर्ति श्रृंखला में बाधा

समुद्री मार्ग, जहाँ से दुनिया का अधिकांश व्यापार और तेल गुजरता है, युद्ध के कारण असुरक्षित हो जाते हैं। बीमा कंपनियों द्वारा मालवाहक जहाजों का प्रीमियम बढ़ा दिया जाता है, जिसका अंतिम बोझ उपभोक्ता की जेब पर पड़ता है।

3. पारिस्थितिक विनाश

युद्ध का नुकसान केवल इंसानों तक सीमित नहीं होता। युद्ध के कारण जंगल नष्ट हो जाते हैं, पानी और हवा प्रदूषित हो जाते हैं, जमीन खराब हो जाती है और कई पशु - पक्षी तथा पौधे नष्ट हो जाते हैं। इसलिए युद्ध प्रकृति को गंभीर रूप से नुकसान पहुँचाता है।

(अ) वायु प्रदूषण और जहरीली गैसें

मिसाइलों के विस्फोटों, रसायनों के उपयोग से निकलने वाला धुआं वायुमंडल के सूक्ष्म कणों के स्तर को खतरनाक रूप से बढ़ा देता है। यह धुआं सीमाओं को नहीं जानता; यह हवा के साथ बहकर पड़ोसी देशों तक भी पहुँचता है। 'स्मोक प्ल्यूम्स' सूरज की रोशनी को बाधित कर सकते हैं, जिससे स्थानीय जलवायु पर बुरा असर पड़ता है। पर्यावरण को गंभीर नुकसान हो सकता है। उदाहरण के लिए, 2026 वर्ष के कुछ समाचार रिपोर्टों के अनुसार अमेरिका और इज़राइल ने ईरान के तेल संसाधनों पर हमला किया। इसके कारण भारी मात्रा में धुआँ फैल गया, जिससे दिन भी रात जैसा लगने लगा और सूर्य का प्रकाश नहीं दिखाई दे रहा था। हवा में सल्फर डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड और अन्य ज़हरीली गैसें शहरों के ऊपर फैल गईं। इससे अम्लीय वर्षा 'एसिड रेन' होने की संभावना भी बढ़ जाती है। सरकार ने लोगों के स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए दिशानिर्देश जारी किए, जिनमें एयर कंडीशनर का उपयोग न करने और अस्थमा जैसी बीमारियों से बचने के लिए घरों से बाहर न निकलने की सलाह दी गई। तेल संसाधनों के जलने से कार्बन उत्सर्जन बढ़ता है, जिससे पर्यावरण से जुड़ी नई समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

(ब) जल प्रदूषण और समुद्री जीवन

नौसैनिक युद्ध और तटीय हमलों के दौरान जब समुद्र, नदियों या जमीन पर तेल टैंकर, पाइपलाइन, जहाज़ या तेल कुओं से बड़ी मात्रा में तेल गलती से फैल जाता है, तो उसे तेल रिसाव कहते हैं। इससे पानी और पर्यावरण प्रदूषित हो जाता है तथा समुद्री

जीवों, पक्षियों और तटीय पारिस्थितिकी तंत्र को गंभीर नुकसान पहुंचाकर समुद्री जीवन के लिए प्रलयकारी होता है। तेल की परत पानी की सतह पर ऑक्सीजन के प्रवाह को रोक देती है, जिससे मछलियाँ और कोरल रीफ 'प्रवाल भित्तियाँ' नष्ट हो जाते हैं। यह न केवल पारिस्थितिकी को नुकसान पहुँचाता है, बल्कि उन समुदायों की आजीविका भी छीन लेता है जो मछली पालन पर निर्भर हैं।

(स) मिट्टी की उर्वरता और रासायनिक अवशेष

विस्फोटकों में प्रयुक्त भारी धातुएं (जैसे सीसा, पारा और यूरेनियम) मिट्टी में मिल जाती हैं। यह प्रदूषक तत्व 'फूड चेन' में प्रवेश कर जाते हैं, जिससे आने वाली पीढ़ियों में कैंसर और जन्मजात विकलांगता जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

4. सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रभाव

'बिखरा हुआ जनजीवन' युद्ध के साये में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं सबसे पहले दम तोड़ती हैं। शिक्षा का अभाव - स्कूलों का बंद होना एक पूरी पीढ़ी को बौद्धिक रूप से पिछड़ा बना देता है। मानसिक स्वास्थ्य - युद्ध के दौरान होने वाला तनाव और भय लोगों के व्यक्तित्व को स्थायी रूप से बदल देता है। एक हिंसक समाज कभी भी रचनात्मक योगदान नहीं दे सकता।

5. समाधान और निष्कर्ष

शांति ही एकमात्र विकल्प लेख के इस अंतिम चरण में, हमें उन समाधानों पर विचार करना होगा जो मानवता को इस आत्मघाती मार्ग से बचा सकें। धरती पहले से ही ग्लोबल वार्मिंग की गंभीर समस्या का सामना कर रही है। युद्ध के दौरान होने वाले हमलों में जब तेल के भंडार और तेल के कुएँ जलते हैं, तो वे प्रकृति के लिए एक बड़े अभिशाप बन जाते हैं, क्योंकि उनसे लाखों टन कार्बन उत्सर्जित होता है। यह स्थिति पर्यावरण को और अधिक नुकसान पहुँचाती है तथा जलवायु परिवर्तन की समस्या को और गहरा करती है। इसलिए यह तबाही एक बार फिर साबित करती है कि युद्धों से किसी को वास्तविक लाभ नहीं मिलता, बल्कि यह मानवता के साथ-साथ प्रकृति के लिए भी विनाश और खतरे की घंटी बनकर सामने आता है।

(अ) स्वतंत्र ऊर्जा स्रोतों की आवश्यकता

ऊर्जा के लिए दूसरे देशों या जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता ही अक्सर युद्ध का कारण बनती है। यदि विश्व सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा जैसे विकेंद्रीकृत स्रोतों की ओर बढ़ता है, तो ऊर्जा के लिए होने वाले संघर्ष स्वतः कम हो जाएंगे। यह न केवल पर्यावरण को बचाएगा, बल्कि देशों को आर्थिक रूप से भी स्वतंत्र बनाएगा।

(ब) कूटनीति और वैश्विक शांति समझौते

देशों या समूहों के बीच बढ़ती हुई हथियारों की प्रतिस्पर्धा [arms race] को रोकना चाहिए और समस्याओं को हल करने के लिए बातचीत और आपसी समझ 'संवाद' का रास्ता अपनाना चाहिए। रासायनिक और परमाणु हथियारों पर पूर्ण प्रतिबंध के साथ-साथ 'डिजिटल वारफेयर' के खिलाफ भी सख्त अंतरराष्ट्रीय कानून होने चाहिए।

(स) अहिंसा और करुणा का मार्ग

महात्मा गांधी और गौतम बुद्ध के सिद्धांतों को आज केवल किताबों में नहीं, बल्कि विदेश नीति में शामिल करने की आवश्यकता है। हमें यह समझना होगा कि एक देश की प्रगति दूसरे के विनाश पर टिकी नहीं रह सकती।

अंतिम विचार - युद्ध का वैश्विक घाव केवल शांति की अपील से नहीं भरेगा, बल्कि इसके लिए सामूहिक उत्तरदायित्व की आवश्यकता है। हमें ऐसी शिक्षा पद्धति विकसित करनी होगी डिजिटल पेडगोगी के माध्यम से जो युवाओं को युद्ध की विभीषिका के प्रति सचेत करे। अंततः, शांति कोई गंतव्य नहीं है, बल्कि यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसे हमें हर दिन चुनना होगा।

संदर्भ सूची:

1. The New Arab & BBC News Youtube - Toxic smoke covers Iran after Massive Oil attacks के बाद ईरान पर जहरीला धुआँ छा गया
2. www.dw.com/en https://www.dw.com/en/iran-war-risks-long-term-toxic-legacy-for-people-and-nature-that-ripples-beyond-borders/a-76335587#:~:text=Fires%20at%20the%20facilities%20sent,headaches%20and%20having%20difficulty%20breathing.

3. NDTV World - https://www.ndtv.com/world-news/the-environment-another-casualty-of-war-in-middle-east-11217659
4. Down to Earth . Org - https://www.downtoearth.org.in/climate-change/israel-gaza-war-has-generated33-million-tonnes-of-carbon-dioxide-equivalent-study
5. Euronews - ईरानी रेड क्रिसेंट ने तेहरान के लोगों को चेतावनी दी है कि वे हवा में मौजूद ज़हरीले प्रदूषकों से बचने के लिए अतिरिक्त सावधानी बरतें।
6. ऑस्टिन, जे. ई., एवं ब्रुच, सी. ई. (संपा.). (2000). युद्ध के पर्यावरणीय परिणाम: विधिक, आर्थिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
7. डास्कालोव, एच., एवं स्मिल, वी. (2013). जैवमंडल का दोहन: हमने प्रकृति से क्या-क्या लिया है। एमआईटी प्रेस। [इस पुस्तक में युद्ध और प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के पर्यावरणीय प्रभावों पर भी चर्चा की गई है।]
8. संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम. (2009). सशस्त्र संघर्ष के दौरान पर्यावरण की सुरक्षा: अंतरराष्ट्रीय कानून का सूचीकरण और विश्लेषण। संयुक्त राष्ट्र।
9. https://iocl.com/pages/SolarCooker
10. https://www.orfonline.org/expert-speak/one-narrow-strait-millions-of-cylinders-india-s-lpg-crisis
11. https://www.bhaskarenglish.in/national/news/shirdi-sai-trust-solar-cooking-40k-devotees-gas-saving-137439422.html